रूहानी ग़ज़लें

दर्शन सिंह

रूहानी ग़ज़लें

दर्शन सिंह

सावन कृपाल पब्लिकेशन्स स्पिरिचुअल सोसायटी

रूहानी ग़ज़लें

प्रथम संस्करण : 1996
वर्तमान संस्करण : 2017

प्रकाशक : सावन कृपाल पब्लिकेशन्स स्पिरिचुअल सोसायटी
कृपाल आश्रम, संत कृपाल सिंह मार्ग, विजय नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27117100

Website : www.sos.org
E-mail : skpindia@sos.org

मुद्रक : न्यूटैक्स प्रिंट एन पैक शाहदरा, दिल्ली–32

सम्पादकीय

इस वर्ष हम सब इस शताब्दी के महान संत एवं सूफ़ी–शायर दर्शन सिंह जी महाराज की हीरक जयन्ती मना रहे हैं। संत दर्शन सिंह जी एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक होने के साथ–साथ एक महान शायर भी थे और उनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उर्दू शायरी में "तलाशे नूर", "मंज़िले नूर", "मताअे नूर", "जाद'ए नूर", "मौजे नूर" और "इश्क़ मिला क़दम क़दम" उनके मुख्य प्रकाशन हैं।

विश्व की आदर्श शायरी का अधिकतम भाग ख़ुदाशनासी और उसके माध्यम से आत्मानुभव से संबंधित विषयों पर आधारित है और इसका विस्तार मानव समाज के घेरे की तरह अति विस्तृत है। शायरी के लिए एक और शर्त है कि वह दिल की आवाज़ हो। यही खूबी थी संत दर्शन सिंह जी की शायरी की। दर्शन सिंह जी की शायरी में प्यार की भावना और प्रेम की मस्ती रची बसी है।

संत दर्शन सिंह जी प्रभु के दर्शन को जीवन की पूँजी मानते थे। प्रभु की प्रसन्नता से वे एक नई शक्ति प्राप्त करते थे, वे अक्सर सोचते थे कि आखिर सृष्टि–कर्ता ने यह जो जीवन हमें प्रदान किया है, उसको सुन्दर बनाना मनुष्य का कर्तव्य है और इस कर्तव्य की अवहेलना कदाचित ईश्वर की मंशा के विपरीत है। यही एहसास है जो उन्हें जीवन के संघर्षों से जोड़ता था और इस मंज़िल पर आकर उनका व्यक्तित्व प्रकाश–स्तंभ बन जाता है और उनके शे'र सरस–सुरुचिपूर्ण काव्यात्मक शैली में जीवनदायिनी शिक्षा का स्रोत बन जाते हैं और सहस्रों बल्कि लाखों लोग उनकी दयाधारा से जुड़ जाते हैं और वे सब अपनी–अपनी परिस्थिति और दृष्टिकोण के अनुसार उनसे प्रकाश ग्रहण करते हैं और उनकी शिक्षाओं को व्यावहारिक जीवन में अपनाने का प्रयास करते थे। संत दर्शन सिंह जी एक खुश्क उपदेशक नहीं थे, उनके पास कलात्मक

सौन्दर्य के साथ वर्णन की चपलता भी थी और शे'र की सरसता प्रचुर मात्रा में मौजूद थी। फ़ारसी और उर्दू की शायरी की परम्परा को विशेषकर उन्होंने अपने चिन्तन और स्वभाव में समो लिया था। मानव अच्छे से अच्छे मार्ग की खोज में काँटों–भरे रास्तों, मैदानों, पहाड़ों और डरावने मरुस्थलों से भी गुज़रता है और जीवन के संघर्ष में जो पद–चिह्न छोड़ जाता है, वे आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक दीप सिद्ध होते हैं और एक दिन वह स्वयं इतिहास बन जाता है, किन्तु मानव का मस्तिष्क ऐसे कर्मयोगियों को चिर काल तक याद रखता है।

काफ़ी समय से माँग थी कि उनकी कुछ चुनी हुई ग़ज़लें, जिन्हें हमारे हिन्दी भाषी पाठक भी समझ सकें, अलग से प्रकाशित हों। इसलिये लेखक की कुछ चुनिन्दा ग़ज़लें आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं। आशा है आपको यह प्रयास पसन्द आयेगा और अंत में लेखक का यह शेर प्रस्तुत है :

दर्शन ये आरज़ू है कि, जब मेरा ज़िक्र हो
क़िस्सों से एहले–दिल के, मेरी दास्तां मिले

योगेश त्यागी

संक्षिप्त जीवन परिचय
(संत दर्शन सिंह जी महाराज)

संत दर्शन सिंह जी महाराज (1921-1989) 'सुरत–शब्द योग' के सत्गुरु एवं सावन कृपाल रूहानी मिशन एवं साइंस ऑफ़ स्पिरिचुएलिटी के संस्थापक थे। यह एक लाभ निरपेक्ष (non-profit) अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जिसका मुख्यालय दिल्ली में है। अपने पंद्रह वर्षीय गुरुपद काल में आपने दिल्ली में कृपाल आश्रम बनाया एवं विश्व के चालीस देशों में पाँच सौ पचास केन्द्र स्थापित किए। आपने छटे विश्व धर्म सम्मेलन, शांति के लिए एशियाई धर्म सम्मेलन एवं पंद्रहवें अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता सम्मेलन (1988, दिल्ली) की अध्यक्षता की। अपने चार विश्व दौरों में आपको कई शहरों की चाबियाँ भेंट की गईं, कोलंबिया (दक्षिण अमरीका) की संसद द्वारा 'मेडल ऑफ़ कांग्रेस' देकर सम्मानित किया गया एवं मिशिगन राज्य की लेजिस्लेचर तथा उत्तरी अमरीका की कांग्रेस द्वारा शांति एवं मानव एकता के आपके सराहनीय प्रयासों के लिए आपको मानपत्र भेंट किए गए।

इसके अलावा, आधुनिक युग में संत दर्शन सिंह जी महाराज भारत के एक अग्रणी रूहानी शायर माने जाते हैं, जिन्होंने कि उर्दू भाषा में लिखा। आपकी शायरी की पुस्तकों, 'मंज़िले–नूर' एवं 'मताए–नूर' को उर्दू अकादमी पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया। इसके अलावा, आपने अंग्रेज़ी में कई पुस्तकें लिखीं तथा उर्दू शायरी में आपकी तीन अन्य पुस्तकें भी छप चुकी हैं। आपकी पुस्तकों का अनुवाद विश्व की पचास भाषाओं में उपलब्ध है।

संत दर्शन सिंह जी ने बचपन में ही ब्यास के बाबा सावन सिंह जी महाराज (1858-1948) से दीक्षा प्राप्त कर ली थी। आपने अपने सत्गुरु एवं उनके उत्तराधिकारी, संत कृपाल सिंह जी महाराज (1894-1974) के मिशन में अनेकों प्रकार से सेवा की। पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने 1942 में सरकारी नौकरी कर ली और अपनी मेहनत, लगन एवं ईमानदारी की बदौलत डिप्टी सेक्रेटरी के उच्च पद से सेवा–निवृत्त हुए।

1974 में संत कृपाल सिंह जी के चोला छोड़ने के बाद, अगले पंद्रह वर्ष तक संत दर्शन सिंह जी ने रूहानियत का कार्य–भार संभाला और सत्य के जिज्ञासुओं को रूहानी रास्ते पर चलाते रहे। आपके महासमाधि में लीन होने के

बाद, अब मिशन का कार्य संत राजिन्दर सिंह जी संभाल रहे हैं जो कि संत होने के साथ–साथ एक वैज्ञानिक भी हैं।

1

निगाहे-मस्ते-साक़ी का सलाम आया तो क्या होगा
अगर फिर तर्के-तौबा का पयाम आया तो क्या होगा

हरम वाले तो पूछेंगे बता तू किसका बन्दा है
ख़ुदा से पहले लब पर उनका नाम आया तो क्या होगा

मुझे मंजूर, उनसे मैं न बोलूँगा मगर नासेह
अगर उनकी निगाहों का सलाम आया तो क्या होगा

चला है आदमी तस्ख़ीरे-मेह्र-ओ-माह की ख़ातिर
मगर सैयाद ही ख़ुद ज़ेरे-दाम आया तो क्या होगा

मुझे तर्के-तलब मंजूर, लेकिन ये तो बतला दो
कोई ख़ुद ही लिए हाथों में जाम आया तो क्या होगा

मुहब्बत के लिए तर्के-तअल्लुक़ ही ज़रूरी हो
मुहब्बत में अगर ऐसा मक़ाम आया तो क्या होगा

जहाँ कुछ ख़ास लोगों पर निगाहे-लुत्फ़ है 'दर्शन'
अगर उस बज़्म में दौरे-अवाम आया तो क्या होगा

2

जिस पे रहमत से भरी एक नज़र हो जाए
दीन-ओ-दुनिया से वो बेगाना बशर हो जाए

दारे-फ़ानी में ही मिल जाए सुरूरे-अबदी
ज़िन्दगी वक्फ़े-ख़राबात अगर हो जाए

इतना तूफ़ान उठाओ न मेरे हम-सफ़रो
डर है कश्ती न कहीं ज़ेर-ओ-ज़बर हो जाए

अनगिनत ज़ख़्मों से खिलता हुआ ये दिल का चमन
आरज़ू है कि तेरी राहगुज़र हो जाए

शे'र वो शे'र जो आवाज़ हो ख़ामोशी की
बेज़बाँ बन के जो पैग़ामे-नज़र हो जाए

इस्तिहाँ है निगहे-शौक़ की बेताबी का
हम तो ख़ामोश रहें उनको ख़बर हो जाए

जल्वा-ए-दोस्त! तुझे अपने तबस्सुम की क़सम
मेरी दुनिया में भी इक बार सहर हो जाए

महफ़िले-हल्का-ए अरबाबे-जुनूँ है 'दर्शन'
बैठ जाए जो यहाँ, एहले नज़र हो जाए

३

रहे–इश्क़ की इन्तिहा चाहता हूँ
जुनूँ सा कोई रहनुमा चाहता हूँ

जो इर्फ़ान की ज़िन्दगी को बढ़ा दे
मैं वो बादा–ए–जांफ़िज़ा चाहता हूँ

मिटा कर मुझे आप में जज़्ब कर ले
बक़ा के लिए मैं फ़ना चाहता हूँ

बयां हाले–दिल मैं करूं क्यों ज़बां से
ख़ुदा जानता है मैं क्या चाहता हूँ

मेरे चारागर मैं हूँ बीमार तेरा
तेरे हाथ से हीं शिफ़ा चाहता हूँ

4

हंसी गुलों में, सितारों में रोशनी न मिली
मिले ना तुम तो कहीं भी हमें ख़ुशी न मिली

न चांद में, न शफ़क़ में, न लाला-ओ-गुल में
जो आप में है कहीं भी वो दिलकशी न मिली

निगाहे-लुत्फ़ की है मुन्तज़िर मेरी शबे-ग़म
सितारे डूब चले और रौशनी न मिली

हमीं को सौंप दिए कुल जहां के रंज-ओ-अलम
किसी में और हमारी सी दिलदिही न मिली

निगाहे-दोस्त ने बख़्शी जो दिल को मदहोशी
शराब-ओ-जाम से हमको वो बेख़ुदी न मिली

हर एक नशात में पिनहाँ मिला नशात का ग़म
जो ऐश से हो बसर ऐसी ज़िन्दगी न मिली

मेरे ख़याल में हैं ये तजल्लियां किसकी
अंधेरी रात में भी मुझको तीरगी न मिली

वही फ़ज़ा, वही गुलशन, वही हवा है मगर
मिली जो गुल को वो ख़ारों को ज़िन्दगी न मिली

गिला करेंगे न अब मेरे बाद के रहरौ
कि उनको राहे–मुहब्बत में रौशनी न मिली

हज़ार बार हुआ ख़ूने–आरज़ू लेकिन
कभी किसी को मेरी आंख में नमी न मिली

जो छेड़ती मेरे बेताब दिल के तारों को
किसी भी साज़ में 'दर्शन' वो नग़्मगी न मिली

हाए जिस एहले-नज़र ने तुझे देखा होगा
वो तमाशाई तो क्या होगा, तमाशा होगा

तेरे दामन पे जो टपका है ये मेरा आंसू
आज आंसू हीं सही, कल तो सितारा होगा

शोला शीशे से गिरेगा तो किरन फूटेगी
आंख साक़ी से मिलेगीं तो सवेरा होगा

जाम-ओ-मीना को जो ठुकरा के उठा महफ़िल से
आप के जल्वा-ए-रंगीं का वो प्यासा होगा

ये जमाले-मह-ओ-खुर्शीद, ये हुस्ने आलम
मेरे महबूब का अक्से-रुख़-ए-ज़ेबा होगा

हाए उस फूल की क़ीमत कोई मुझसे पूछे
उसने बेकार समझ कर जिसे फेंका होगा

आज पामाले-ख़ज़ां है, मगर ए दिल कब तक!
कल ख़राबा यहीं, जन्नत का नमूना होगा

इरतिक़ा का ये मुसाफ़िर जिसे कहते हैं बशर
कितने पुरहौल मराहिल से ये गुज़रा होगा

अश्क़ आंखों में, न लब पर कोई शिकवा 'दर्शन'
अब नये तौर से इज़्हारे-तमन्ना होगा

6

किसी की शामे-सादगी, सहर का रंग पा गई
सबा के पाँओं थक गए, मगर बहार आ गई

चमन की जश्नगाह में, उदासियाँ भी कम न थीं
जली जो कोई शम्ए गुल, कली का दिल बुझा गई

बुताने-रंग-रंग से भरे थे बुतकदे मगर
तेरी अदाए सादगी मेरी नज़र को भा गई

चरागे़-शब के हाल पर टपक रहे थे अश्के़-दिल
बड़ी सितम-ज़रीफ़ थी सहर जो मुस्कुरा गई

निगाहे-साक़ीए-अज़ल, अजब करिश्मा साज़ थी
जुनूँ की आंख खुल गई, ख़िरद को नींद आ गई

मेरी निगाहे-तश्ना-लब की सरख़ुशी न पूछिए
कि जब उठी निगाहे नाज़, पी गई, पिला गई

ग़रीबे-दश्त के लिए अनीसे-वक़्त कौन था
बस एक शामे-बेकसी गले से जो लगा गई

ख़ज़ां का दौर है मगर, वो इस अदा से आए हैं
बहार 'दर्शने'-हज़ीं की ज़िन्दगी पे छा गई

7

अल्ला अल्ला! लुत्फ़ क्या साक़ी के मैख़ाने में है
जल्वा गर राज़े-दोआलम उसके पैमाने में है

दैर में क्या जुस्तजू है? क्या है का'बे में तलाश?
चश्मे-बातिन खोल, वो दिल के सनमख़ाने में है

सुब्ह तक मेरी भी ख़ाकस्तर मिलेगी दोस्तों
दिल में है वो सोज़े-ग़मख़्वारी जो पर्वाने में है

चश्मे साक़ी ने छुपा रक्खी है सहबाए-यक़ीं
है फ़रेबे-तश्नगी जो कुछ कि पैमाने में है

कौन जाने क्या तमाशा है कि साज़ों के बग़ैर
इक हुजूमे-नग़्मगी दिल के नवाख़ाने में है

साक़िया! क्यूं कुश्ता-ए-रहमत है मेरी आरज़ू
इक सुरूरे-सरमदी सुनता हूँ मैख़ाने में है

बैठे बैठे ख़ुद मुझे होता है अक्सर ये गुमाँ
नग़्मा-गर मुतरिब कोई दिल के तरबख़ाने में है

ज़िन्दगी में तुझको 'दर्शन' मिल नहीं सकता कहीं
वो सुरूर-ओ-कैफ़ जो मुर्शिद के ख़ुमख़ाने में है

8

जज़्बा–ए–दिल को अमल में कभी लाओ तो सही
अपनी मंज़िल की तरफ़ पाँव बढ़ाओ तो सही

ज़िन्दगी वो जो हरीफ़े–ग़मे–अय्याम रहे
दिल शिकस्ता है तो क्या, साज़ उठाओ तो सही

जाग उट्ठेगी ये सोई हुई दुनिया, लेकिन
पहले ख़्वाबीदा तमन्ना को जगाओ तो सही

फूल ही फूल हैं कहते हो जिन्हें तुम काँटे
मेरी दुनिया–ए–जुनूँ में कभी आओ तो सही

तुम्हें आबाद नज़र आएगी उजड़ी दुनिया
दिल की दुनिया को मुहब्बत से बसाओ तो सही

ज़िन्दगी फिर से जवाँ, फिर से हसीं हो जाए
उनकी आँखों से ज़रा आँख मिलाओ तो सही

करते फिरते हो अंधेरे की शिकायत 'दर्शन'
दिल की दुनिया में कोई दीप जलाओ तो सही

९

मस्ताना हवाएँ चलने लगीं आओ छल्काएँ जामे-ग़ज़ल
पैग़ामे-शमीमे-गुलशन से रंगीन हुई फिर शामे-ग़ज़ल

मौसम के निगारो आ जाओ होंटों पे लिए पैग़ामे-ग़ज़ल
तकता है तुम्हारी आहट को हर सहने-ग़ज़ल, हर बामे ग़ज़ल

ये ढलती रात की तन्हाई ये चश्मे-तमन्ना भीगी हुई
ये दर्दे-जुनूँ की बेदारी फ़ैज़ाने-ग़ज़ल, इनआमे-ग़ज़ल

मौसम का तबस्सुम क्या कहिए, गोया है ग़ज़ल का शे'र कोई
शानों पे नहीं गेसू-ए-सिया फैंका है किसी ने दामे-ग़ज़ल

आँखों को उजाले मिलते हैं ख़्वाबों के शिगूफ़े खिलते हैं
क्या बात है आरिज़-ओ-गेसू की, इक सुब्हे-ग़ज़ल, इक शामे-ग़ज़ल

हर गाम पे लहरा जाती है सपनों की किरन अरमान की लौ
तारों में टहलने लगती है जब हूरे-सुबुक-अन्दामे-ग़ज़ल

अशआरे ग़ज़ल पर रख देना तेशा न कहीं तन्क़ीदों का
शीशे से भी नाजुक होते हैं ये सीम-बदन असनामे-ग़ज़ल

अफ़्कारे-शमीमे-दाना से दुनियाए-अदब में ऐ 'दर्शन'
ताबाँ-ओ-हसीं है सुब्हे-सुख़न, रंगीन-ओ-जवां है शामे-ग़ज़ल

10

दिल अपना मैकशी का तलबगार भी नहीं
हां वो अगर पिलायें तो इन्कार भी नहीं

एहदे–वफ़ा की सुब्ह का क्या ज़िक्र दोस्तों
एहदे–वफ़ा की सुब्ह के आसार भी नहीं

जुल्मत कदा है ऐसा सनम–ख़ाना–ए–ख़िरद
जिसमें जुनूँ का गोशा–ए–अनवार भी नहीं

सूना पड़ा है देर से मैख़ाना–ए–वफ़ा
साक़ी का ज़िक्र क्या कोई मैख़्वार भी नहीं

गुलशन उजाड़ हो गया दुनिया बदल गई
क्या ढूंढते हो गुल कि यहां ख़ार भी नहीं

'दर्शन' न पूछो जुल्मते–दुनियाए–आशिक़ी
कोई चराग़ अब तो सरे–दार भी नहीं

11

वो सलीक़ा हमें जीने का सिखा दे साक़ी
जो ग़मे-दह्र से बेगाना बना दे साक़ी

जाम-ओ-मीना मेरी नज़रों से हटा दे साक़ी
ये जो आंखों में छलकती है पिला दे साक़ी

शो'ला-ए-इश्क़ से छलका दे मेरे शीशे को
और बेताब को बेताब बना दे साक़ी

हरम-ओ-दैर में बँट जाते हैं रिन्दाने-वफ़ा
हरम-ओ-दैर की तफ़रीक़ मिटा दे साक़ी

सुन रहा हूँ कि मुयस्सर ही नहीं दुनिया में
इक निगह राज़े-दो-आलम जो बता दे साक़ी

ख़ुश्क़ है मौसमे-एहसास फ़ज़ा प्यासी है
ख़ुम के ख़ुम सीना-ए-गेती पे लुंढा दे साक़ी

फिर कभी होश न आए तो कोई बात नहीं
आज हम जितनी पीएं, उतनी पिला दे साक़ी

जोशे-मस्ती में बग़लगीर हों बिछड़े हुए दिल
आज इंसान को इंसान बना दे साक़ी

ज़िन्दगी ख़्वाबे-मुसल्सल के सिवा कुछ न सही
इसकी ता'बीर तो 'दर्शन' को बता दे साक़ी

12

मुहब्बत की मताअ़े जाविदानी ले के आया हूँ
तेरे क़दमों में अपनी ज़िन्दगानी ले के आया हूँ

कहाँ सीम-ओ-गुहर जिनको लुटाऊं तेरे क़दमों पर
बराए नज़्र, अश्क़ों की रवानी ले के आया हूँ

तुझे जो पूछना हो पूछ ले ऐ दावरे-महशर
मैं अपने साथ अपनी बेज़बानी ले के आया हूँ

ज़मीन-ओ-मुल्क के बदले दिलों पर है नज़र मेरी
अछूता इक तरीक़े-हुक्मरानी ले के आया हूँ

मेरे ज़ख़्मे-तमन्ना देख कर पहचान लो मुझको
तुम्हारी ही अता-करदा निशानी ले के आया हूँ

मेरे अशआर में मुज़्मिर हैं लाखों धड़कनें दिल की
मैं इक दुनिया का ग़म दिल की ज़बानी लेके आया हूँ

मुहब्बत नाम है बेताबी-ए-दिल के तसल्सुल का
मुहब्बत की मैं 'दर्शन' ये निशानी ले के आया हूँ

13

जब कभी साक़िए–मदहोश की याद आती है
नश्शा बनकर मेरी रग–रग में समा जाती है

डर ये है टूट न जाए कहीं मेरी तौबा
चार जानिब से घटा घिर के चली आती है

मुस्कुराती है कली, फूल हंसे पड़ते हैं
मेरे महबूब का पैग़ाम सबा लाती है

ज़िन्दगी ख़ुश है इसी कशमकशे–पैहम से
ज़िन्दगी में न कशाकश हो तो घबराती है

जान पर्वाने की लेने को तो ले ली लेकिन
अपने अन्जाम पे लौ शम्'अ की थर्राती है

जब कभी ज़ीस्त के औराक़ पे जाती है नज़र
याद गुज़रे हुए अय्याम की आ जाती है

दूर के ढोल तो होते हैं सुहाने 'दर्शन'
दूर से कितनी हसीं बर्क़ नज़र आती है

14

मंज़िल कहाँ ख़याल की, दैर-ओ-हरम कहाँ
पहुँचे तलाशे-यार में अपने क़दम कहाँ

हाँ मेरे दर्दे-दिल का तक़ाजा तो है मगर
देखूँ मैं इज़्तराब में तुझको, ये दम कहाँ

ज़ाहिद ये मेरा दिल है मगर ख़ुद से बेनियाज़
इसमें तो है जहान का ग़म, अपना ग़म कहाँ

उल्फ़त तो इक ख़ुलूस का सौदा है ऐ नदीम
इसमें ख़याले कैफ़ियते-बेश-ओ-कम कहाँ

आशिक़ के दिल में दोनों जहाँ आश्कार हैं
इस मर्तबे को पहुँचा भला जामे-जम कहाँ

इक बेख़ुदी सी खेंच के लाई है साक़िया!
वरना शराबख़ाना कहाँ, और हम कहाँ

'दर्शन' हज़ार बारिशे-रहमत के बावजूद
होती है अपनी तश्नगी-ए-शौक़ कम कहाँ

15

दौलत मिली जहान की, नामो–निशां मिले
सब कुछ मिला हमें न मगर मेहबां मिले

पहले भी जैसे देख चुके हों उन्हें कहीं
अन्जान वादियों में कुछ ऐसे निशां मिले

बढ़ता गया मैं मंज़िले–महबूब की तरफ़
हाइल अगरचे राह में संगे–गरां मिले

रोना पड़ा नसीब के हाथों हज़ार बार
इक बार मुस्कुरा के जो तुम मेहबां मिले

हमको खुशी मिली भी तो बस आरज़ी मिली
लेकिन जो ग़म मिले वो ग़मे–जाविदां मिले

बाक़ी रहेगी हश्र तक उनके करम की याद
मुझको रहे–हयात में जो मेहबां मिले

फिर क्यूं करे तलाश कोई और आस्तां
वो खुशनसीब जिसको तेरा आस्तां मिले

एहले–सितम की दिल–शिकनी का सबब हुआ
दिल का ये हौसला कि ग़मे–बेकरां मिले

साक़ी की इक निगाह से काया पलट गई
ज़ाहिद जो मैकदे में मिले नौजवां मिले

दैर–ओ–हरम के लोग भी दरमां न कर सके
वो भी असीरे–कशमकशे ईंन–ओ–आं मिले

नज़रें तलाश करती रहीं जिनको उम्र भर
'दर्शन' को वो सुकून के लम्हे कहाँ मिले

16

लिखेगीं आबे-ज़र से ज़िन्दगीं कल तेरा अफ़्साना
गुज़र भीं जा, जहाने रंगो-बू से बे-नियाज़ाना

वहीं हम हैं, वहीं मै है, वहीं मीना-ओ-पैमाना
नहीं साक़ी तो मैख़ाना नज़र आता है वीराना

नहीं है होश तन मन का वुफूरे यास-ओ-हसरत से
हुआ जाता है किसके हिज्र में हर रिन्द दीवाना

लरज़तीं शम्'अ कीं लौ क्या जला सकतीं है औरों को
जला करता है सोज़े-इश्क़ में ख़ुद अपने पर्वाना

सरे-मैख़ाना 'दर्शन' को जो हो जाए तेरा दर्शन
छलक उट्ठे सुराहीं वज्द में आ जाए पैमाना

17

बहार भीगने लगती है, रात ढलती है
तो उनकी याद बहुत करवटें बदलती है

जो तेरे मस्त की हालत कभी संभलती है
हयात सागरे-ग़म ले के आ निकलती है

निगाहे-शौक़ की बेताबियों पे क्यों इल्ज़ाम
शराब शीशा-ए-रंगीं में खुद मचलती है

तुम्हारी याद ने बेगाना कर दिया खुद से
कहीं भी जाऊं, तबीयत नहीं बहलती है

बहार सैर के क़ाबिल तो है मगर हमदम
हर एक फूल से इक आंच सी निकलती है

तेरे फ़िराक़ में जीना है नागवार इतना
नफ़स-नफ़स कोई तलवार जैसे चलती है

ग़मे-वफ़ा से गुदाज़े-हयात है 'दर्शन'
ये शम्'अ अपनी हरारत से खुद पिघलती है

18

गुनगुनाती है हवा, फूल खिले, दीप जले
हंस पड़ी रात महकते हुए आंचल के तले

यूँ तमन्नाएँ चमक उट्ठी हैं दिल में जैसे
चेहरा-ए-वक़्त पे रह रह के कोई हाथ मले

बच के तारों की निगाहों से, गुलों से छुप कर
दो निगाहों की मुलाक़ात हुई रात ढले

रंग-ओ-ख़ुशबू से छलकने लगा मैख़ाना-ए-दिल
साक़िया! जाम चले, जाम चले, जाम चले

आज 'दर्शन' नये अन्दाज़ से है गर्मे-नवा
उसकी आवाज़ से नग़मों के नये दीप जले

19

है शर्त दिल से दिल मिले और जां से जां मिले
अक्सर मिले वो राह में, लेकिन कहां मिले

पर्वाना चुप था शम्'अ के मुँह में जुबाँ ना थी
महफ़िल में एक दो हीं मुझे राज़दां मिले

हर्फ़े-जुनूँ ख़ता है जहाँ ज़िक्रे-इश्क़ जुर्म
देखो तो इत्तिफ़ाक़ से हम तुम कहाँ मिले

दैर-ओ-हरम में ढूँढ के हम थक गए नदीम
हिन्दू यहाँ मिले न मुसलमाँ वहाँ मिले

दुनिया के सारे दर्द का दर्मां है इक निगाह
लेकिन वो इक निगाहे-मुहब्बत कहाँ मिले

यूं चल रहे वफ़ा में कि चलना हो यादगार
हर मोड़ पर हयात के तेरा निशां मिले

'दर्शन' ये आरज़ू है कि जब मेरा ज़िक्र हो
क़िस्सों से एहले-दिल के मेरी दास्तां मिले

20

हैं और वो अपनों से जो कतरा के चले हैं
हम वो हैं जो ग़ैरों को भी अपना के चले हैं

उलझे हीं नहीं गेसूए-पुरख़म में किसीं के
हम वक़्त की जुल्फ़ों को भी सुलझा के चले हैं

हंगामे-सफ़र दीद के क़ाबिल था नज़ारा
ख़ुद तड़पे हैं औरों को भी तड़पा के चले हैं

हर मोड़ पे मंज़िल का गुमां मुझको हुआ है
जब क़ाफ़िले कुछ मेरी तमन्ना के चले हैं

जैसे कि चले जानिबे-मैख़ाना शराबी
आशिक तेरे यूं दार पे लहरा के चले हैं

उम्मीद थीं जिनसे कि बुझाएंगे मेरी प्यास
वो और भी कुछ प्यास को भड़का के चले हैं

उट्ठे हैं दरे-साक़िए उल्फ़त से जो 'दर्शन'
महसूस ये होता है कि कुछ पा के चले हैं

21

आज दिल से दुआ करे कोई
हक्के़-उल्फ़त अदा करे कोई

जिस तरह दिल मेरा तड़पता है
यूं ना तड़पे, ख़ुदा करे कोई

जान-ओ-दिल हमने कर दिए कुर्बां
वो ना माने, तो क्या करे कोई

दिले-बेताब की तमन्ना है
फिर कहूँ मैं, सुना करे कोई

मस्त नज़रों से ख़ुद मेरा साक़ी
फिर पिलाए, पिया करे कोई

मए-इर्फ़ां के हम भी हैं मुश्ताक़
दरे-मैख़ाना वा करे कोई

शौके़-दीदार दिल में है 'दर्शन'
आ भी जाए ख़ुदा करे कोई

22

कहूँ कैसे, क्या ऐ खुदा चाहता हूँ!
करम की तेरे इन्तिहा चाहता हूँ

खुदी को मिटा कर खुदा चाहता हूँ
जुनूँ सा कोई रहनुमा चाहता हूँ

जो बख़्शे मुझे जाविदां ज़िन्दगानी
इक ऐसी नज़र जाँ–फ़िज़ा चाहता हूँ

अज़ल से हूँ तेरे ही दर का भिखारी
मैं औरों से भी कुछ सिवा चाहता हूँ

बयां हाले–दिल मैं करूं क्यों ज़बाँ से
कि तू जानता है मैं क्या चाहता हूँ

नहीं जानता मैं कि क्या तुझसे माँगूं
जो मेरे लिए हो भला, चाहता हूँ

मैं 'दर्शन' गुनहगार हूँ, अपने सर पर
तेरा पाक साया सदा चाहता हूँ

23

क्या मुहब्बत का अनोखा साज़ है
दो दिलों की एक सी आवाज़ है

बे–निशां, बे–नाम उसकी इन्तिहा
ज़िन्दगी आग़ाज़ ही आग़ाज़ है

कल तलक दिल था बिसाते–नग़्मगी
आज लेकिन इक शिकस्ता साज़ है

ख़ामुशी कैसे छुपाए उनसे राज़
चश्मे–तर जब सर–ब–सर ग़म्माज़ है

मुझको मत समझो गदाए–मैकदा
अर्शे–आज़म तक मेरी पर्वाज़ है

महव हूँ 'दर्शन' ख़याले यार में
मुझको अपनी बेख़ुदी पर नाज़ है

24

रक़्स करती है फ़ज़ा वज्द में जाम आया है
फिर कोई ले के बहारों का पयाम आया है

बादा-ख़्वाराने-फ़ना! बढ़ के क़दम लो उसके
ले के साग़र में जो सहबाए-दवाम आया है

मैंने सीखा है ज़माने से मुहब्बत करना
तेरा पैग़ामे-मुहब्बत, मेरे काम आया है

रहबरे-जादा-ए-हक़, नूरे-ख़ुदा, हादिए-दीं
ले के ख़ालिक का ज़माने में पयाम आया है

तेरी मंज़िल है बुलन्द इतनी, कि हर शामो-सहर
चांद सूरज से तेरे दर को सलाम आया है

हो गया तेरी मुहब्बत में गिरिफ़्तार तो फिर
ताइरे-रूह भला, कब तहे-दाम आया है

ख़ुद-बख़ुद झुक गई पेशानिए-अरबाबे ख़ुदी
इश्क़ की राह में ऐसा भी मक़ाम आया है

आसियो! शुक्र की जा है कि बफ़ैज़े-ख़ालिक़
हम गुनहगारों की बख़्शिश का पयाम आया है

हरम–ओ–दैर के लोगों की ख़ुशी क्या कहना
बन्दा–ए–ख़ालिक़–ओ दिलदादा–ए–राम आया है

तश्ना–कामाने–नज़ारा को ये मुज़्दा दे दो
बेनक़ाब आज कोई फिर सरे–बाम आया है

हो मुबारक तुम्हें रिन्दो! कि बताईदे–ख़ुदा
कोई छलकाता हुआ शीशा–ओ–जाम आया है

जब कभी गर्दिशे–दौरां ने सताया है बहुत
तेरे रिन्दों की ज़बां पर तेरा नाम आया है

एहले–मग़रिब को पिला कर मए–इर्फ़ाँ 'दर्शन'
फिर से मशरिक़ की तरफ़ अर्श–मक़ाम आया है

25

महफ़िल में मुहब्बत की नज़र ढूँढ रहे हैं
हम शामे-तमन्ना की सहर ढूँढ रहे हैं

बे-वजह नहीं दश्ते-मुहब्बत में तजस्सुस
जीने के लिए राहगुज़र ढूँढ रहे हैं

कुछ लुत्फ़े-इबादत न मिला दैर-ओ-हरम में
सज्दे के लिए फिर कोई दर ढूँढ रहे हैं

दरकार है एहसासे-वफ़ा, दर्दे रफ़ाक़त
असबाबे-सफ़र बह्रए-सफ़र ढूँढ रहे हैं

हम एहले-जुनूँ हैं अबदी इश्क़ के तालिब
जो आ के न जाए वो सहर ढूँढ रहे हैं

होतीं हों जहाँ अम्न-ओ-मुरव्वत की ही बातें
हम ऐसा मुहब्बत का नगर ढूँढ रहे हैं

अपनी तो निगाहों में हैं गुलहाए-बहाराँ
वो और हैं जो बर्क-ओ-शरर ढूँढ रहे हैं

हम मंज़िले-उल्फ़त के लिए आबला पा हैं
हम सुर्ख़े-तमन्नाए-बशर ढूँढ रहे हैं

घबराए हैं जो तीरगिए-वक़्त से 'दर्शन'
हर सुर्ख़ो-मसा शम्स-ओ-क़मर ढूँढ रहे हैं

26

ख़ुदा का नूर मुर्शिद में भला मालूम होता है
ये आईना है वो जिसमें ख़ुदा मालूम होता है

ख़ुदा की शान बन्दे में ख़ुदा मालूम होता है
मैं हैरां हूँ कि इस पर भी वो नामालूम होता है

रुख़े मुर्शिद में वो नूरे–सफ़ा मालूम होता है
कि मुर्शिद ही बनफ़्से ख़ुद ख़ुदा मालूम होता है

न जाने कौन–सी तुझमें कशिश है ऐ मेरे मुर्शिद
जिसे देखो वही तुझ पर फ़िदा मालूम होता है

समझ लेना उसे महदूद कोताही है बीनश की
तेरा गेसू हमें लाइन्तिहा मालूम होता है

27

वो पैकरे–बहार थे, जिधर से वो गुज़र गए
ख़ज़ां नसीब रास्ते भी सज गए संवर गए

ये बात होश की नहीं ये रंग बेख़ुदी का है
मैं कुछ जवाब दे गया, वो कुछ सवाल कर गए

मेरी नज़र का ज़ौक़ भी शरीक–ए–हुस्न हो गया
वो और भी संवर गए, वो और भी निखर गए

मैं रहज़नों से तो बचा रहे–हयात में, मगर
जो काम रहज़नों का था, वो राहबर हीं कर गए

न जामे–मुल, न शामे–गुल, चमन उदास उदास है
वो क्या रुके कि क़ाफ़िले बहार के ठहर गए

हमें तो शौक़े–जुस्तजू में होश हीं नहीं रहा
सुना है वो तो बारहा क़रीब से गुज़र गए

नवाए–'दर्शने'–हज़ीं बहुत नहीफ़ थीं मगर
फ़ज़ाए–दिल की ख़ामुशी में फूल से बिखर गए

28

बातें ख़ुद अपने दिल से किए जा रहा हूँ मैं
तन्हाई को फ़रेब दिये जा रहा हूँ मैं

अब उनका ग़म भी वजहे-तसल्ली नहीं रहा
ये ग़म भी अपने साथ लिए जा रहा हूँ मैं

जिस रहगुज़र से गुज़रा है उनका ख़याल भी
उस रहगुज़र पे सज्दे किये जा रहा हूँ मैं

बेख़ौफ़ गुज़रें राह से अब एहले कारवां
कांटों को अपने साथ लिये जा रहा हूँ मैं

'दर्शन' अब अपने पास है क्या जुज़ ग़मे-फ़िराक़
इक दिल था वो भी उनको दिये जा रहा हूँ मैं

29

वो ज़ीनते पहलू हैं, महताब है, गुलशन है
महसूस ये होता है, ये रात सुहागन है

ऐ जाने-हया तेरी ख़ल्वत का है क्या आलम!
सहमी हुई नज़रें हैं, सिमटा हुआ दामन है

अब राहे-मुहब्बत में लुट जाने के दिन आए
ऐ दिल न बचा ख़ुद को अपना ही तो रहज़न है

बतलाएं तो हम कैसे, समझाएं तो हम क्यूं कर
गुमनाम सी ख़्वाहिश है अंजान सी उलझन है

हर दोस्त के चेहरे पर सद-रंग नक़ाबें हैं
दुश्मन तो बहर सूरत मालूम है दुश्मन है

बरबादिए-गुलशन के असबाब फ़राहम हैं
गुलचीं है, शिगूफ़े हैं, बिजली है, नशेमन है

हर मोड़ पे गुलशन के रुकते हैं क़दम 'दर्शन'
कांटों की शरारत है या शोख़िए दामन है

30

जबीं किस किस तरह उस दर पे ठुकराई नहीं जाती
मगर इंसान की ख़ूए-जबीं-साई नहीं जाती

मुहब्बत जज़्बए-बेइख़्तियारे-दिल को कहते हैं
घटा ये ख़ुद बरस जाती है, बरसाई नहीं जाती

कोई तो बात है नज़रों में जो राज़े मुहब्बत है
तो फिर होटों से क्यूं इर्शाद फ़रमाई नहीं जाती

वफ़ा से बढ़ के दुनिया में कोई शै हो नहीं सकती
मगर ये जिन्स दुनिया में कहीं पाई नहीं जाती

मिला क्या चांद पर भी जा के मिट्टी के सिवा आख़िर
जुनूने-शौक़ की ये चर्ख़-पैमाई नहीं जाती

मुहब्बत की नज़र क्या चीज़ है पूछो न ऐ 'दर्शन'
समझ में आप आ जाती है, समझाई नहीं जाती

31

तेरे बग़ैर तो मेरा अजीब आलम है
कि ज़िन्दगी की मसर्रत, न मौत का ग़म है

हज़ार दिल हैं धड़कते हुए ज़माने में
मगर वो दिल कि जो दर्दे-बशर का महरम है!

तरस रहा हूँ मैं इक लम्हा-ए-सुकूं के लिए
ये ज़िन्दगी तो नहीं, ज़िन्दगी का मातम है

तमाम आलमे-फ़ानी ने साथ छोड़ दिया
बस एक मुर्शिदे-कामिल ही मेरा हमदम है

ये बज़्मे-एहले-हवस है, यहाँ ख़ुलूस कहाँ!
यहाँ तो जाम बहुत हैं, शराब ही कम है

तेरे निसार, मुझे तूने बख़्श दी जन्नत
तेरा ख़याल ही रंगीनियों का आलम है

वो और हैं जिन्हें अपना ही ग़म है ऐ हमदम
हमारे दिल में तो सारे जहान का ग़म है

अदब से देख रहे हैं मुझे मह-ओ-ख़ुर्शीद
न जाने किसके क़दम पर मेरी जबीं ख़म है

मिज़ाजे-दोस्त की रंगीनियाँ बतायें क्या
कभी वो शो'लआ है यारो, कभी वो शबनम है

वो सर कि जिसको ना सजदे से थी कोई निस्बत
न जाने क्यूं तेरे दर पर वो देर से ख़म है

अता हुआ हो जो ख़ुद दस्ते-नाज़ से 'दर्शन'
मुझे वो जामे-सिफ़ालीं हीं सागरे-जम है

32

किसका दर है कि जबीं आप झुकी जाती है
दिले खुद्दार! तेरी आन मिटी जाती है

आरज़ू दिल की जवानी में मिटी जाती है
हाय क्या शमा सरे-शाम बुझी जाती है

तुम जो आँखों से पिलाओ तो बुझे भी कुछ प्यास
जामो-मीना से कहीं तश्ना-लबी जाती है

जाने क्यूँ देख के ऐ जाने-बहाराँ तुझ को
ख़ुद बख़ुद दिल की कली आज खिली जाती है

डबडबाई हुई आँखें मेरी देख ऐ साक़ी
तेरे मैख़ाने में इस तरह भी पी जाती है

तुम मेरे शिक्वा-ए-इख़्लास पे क्यूं रूठ गए
बात कहने की जो होती है कही जाती है

फूल खिलता है गुलिस्तां में तो आती है सदा
ज़िन्दगी मौत से नज़दीक हुई जाती है

नागवारा है बहुत शोरिशे-नग़्माते-ख़िरद
जिसमें इंसान की आवाज़ दबी जाती है

सूए मैख़ाना ज़रा तेज़ क़दम ऐ 'दर्शन'
तेरे हिस्से की भी ग़ैरों में बँटी जाती है

३३

ख़ुम के ख़ुम नर्गिसी आँखों से लुंढा दे साक़ी
आज मतवालों को जी भर के पिला दे साक़ी

बादा-ए-साफ़ से दिल साफ़ हुआ है मेरा
अब मुझे राज़ दो-आलम का बता दे साक़ी

जाने-मैख़ाना! तुझे मस्त निगाही की क़सम
रंज-ओ-ग़म से मुझे बेगाना बना दे साक़ी

तेरी नज़रों की है क़ीमत दिल-ओ-ईमां ही अगर
तेरी नज़रों पे निछावर हैं, पिला दे साक़ी

तेरे दर्शन के लिए आया है 'दर्शन' तेरा
मए-दीदार ज़रा उसको पिला दे साक़ी

34

राज़ ये मुझ पे आश्कारा है
इश्क़ शबनम नहीं शरारा है

इक निगाहे–करम, फिर उसके बाद
उम्र भर का सितम गवारा है

रक़्स में हैं जो साग़र–ओ–मीना
किसकी नज़रों का ये इशारा है

ऐसी मंज़िल पे आ गया हूँ जहाँ
तेरे ग़म का ही इक सहारा है

लौट आए हैं यार के दर से
वक़्त ने जब हमें पुकारा है

दिल न टूटे तो ज़र्र–ए–नाचीज़
कीमिया है जो पारा–पारा है

जामे–रंगी में उनका अक़्से–जमाल
या शफ़क़ में कोई सितारा है

नाव टकरा चुकी है तूफ़ाँ से
अब तो मुर्शिद का ही सहारा है

इश्क़ करना है मात खा जाना
इसमें जीता हुआ भी हारा है

अपने 'दर्शन' पे इक निगाहे–करम
वो ग़मे ज़िन्दगी का मारा है

35

होश वालों को सरासीमा–ओ–हैरां देखा
तेरे दीवाने को हर हाल में शादाँ देखा

डबडबाई हुई आँखें जो उठाई शबे–ग़म
तो सितारों के क़रीब आपको ख़ंदां देखा

ग़मे–दुनिया, ग़मे–हस्ती, ग़मे–जानाँ, ग़मे दिल
कितने ही काँटों से उलझा हुआ दामां देखा

ज़र्रे–ज़र्रे से हुवैदा है तेरे हुस्न की ज़ौ
ऐसे आलम में जहाँ अक़्ल को हैराँ देखा

डाल दी जिसने मह–ओ–मेह्र पे दानिश की कमंद
हमने ऐ दौरे–जुनूं तेरा वो इन्साँ देखा

सब यहाँ वहदते जल्वा के परस्तार मिले
तेरी महफ़िल में न हिन्दू न मुसलमाँ देखा

हमने उन शोख़ हवाओं की बलाएं ली हैं
जिनसे अक्सर तेरी जुल्फ़ों को परेशां देखा

तेरे दीवाने ने ठुकरा दिए दोनों आलम
एहले ज़ाहिर ने उसे बे–सरो–सामाँ देखा

उसको फ़ुर्सत हीं कहां हाल पे औरों के हँसे
अपने हीं हाल पे दीवाने को ख़ंदां देखा

आँख वालों की शहादत भी शहादत है कोई
आँख वालों ने तुझे ता-हदे-इम्कां देखा

रूह मुज़्तर रही जिनमें, वो मिले शीश महल
रूह को अम्न मिला जिसमें, वो ज़िंदा देखा

कट गई उम्र मुहब्बत के सफ़र में लेकिन
सुब्ह को शामे-तमन्ना से गुरेज़ां देखा

बेकसी शामे-तमन्ना को न भूलेगी कभी
अपने साए को भी अपने से गुरेज़ां देखा

एक 'दर्शन' हीं मिला औरों का ग़मख़्वार हमें
अपने ग़म में तो जमाने को परेशाँ देखा

36

ख़ाक से ताब-कहकशां, हमने तो जब किया सफ़र
इश्क़ मिला क़दम क़दम, हुस्न मिला नज़र-नज़र

कैसा ख़याले-गुमरही, कैसा हिरासे दश्तो-दर
शौक़ है तेरा रहनुमा, याद है तेरी हमसफ़र

हमने भी जा के देख ली एहले ख़िरद की रहगुज़र
सोए हुए से राहरौ, खोए हुए से राहबर

कोई मिले तो पूछ लें, मौसमे-गुल तो है, मगर
गर्दे-ख़िज़ां पड़ी है क्यों आइना-ए-बहार पर

ऐ दिले बेक़रार आ, रो लें, तड़प लें, जाग लें
नींद की फ़िक्र क्या अभी, रात मिली है बे-सहर

दिल से निकल के हर सदा क्यों न दिलों में डूब जाय
साज़ मेरा लतीफ़ है, नग़्मा तेरा लतीफ़ तर

सुब्हे-अज़ल से मैं चला, शामे-अबद तक आ गया
उम्रे-दराज़े-शौक़ है, मेरी हयाते-मुख़्तसर

वुसअते-काइनात की सैर का माहसल तो है
तेरे ही दर पे आएगा कल ये थका हुआ बशर

अपने ही दोस्त की तो हैं जितनी हैं ये निशानियां
दैर मिले तो सर झुका, का'बा मिले, सलाम कर

वादा-ए-दोस्त है फ़क़त हर्फ़े-फ़रेबे-आरज़ू
रात गुज़र गई तो फिर रात का इन्तिज़ार कर

हुस्न से भी सिवा है कुछ, इश्क़ की रौशनी हमें
वो है चरागे़-अंजुमन, ये है चरागे़-रहगुज़र

देखिए हश्र क्या हो अब, अपने दिले-तबाह का
मेरी नज़र है उस तरफ़, उसकी निगाह ख़ुद निगर

चश्मे-करम गराँ सही, चश्मे-करम न कीजिये
हाँ मगर इक निगाहे-नाज़, 'दर्शने' ख़स्ता-हाल पर

37

दोस्तो! रूह की आवाज़ सुनो

ये नज़्म 1965 में तीसरे विश्व धर्म सम्मेलन के समापन सत्र में संत दर्शन सिंह जी महाराज ने पढ़ी। इस लम्बी नज़्म के कुछ अंश प्रस्तुत हैं :

दोस्तो! रूह की आवाज़ सुनो
रूह ने दर्द के आलम में पुकारा है तुम्हें

रूह इंसान की दुख-दर्द से घबराई है
हर तरफ़ रंज-ओ-मुसीबत की घटा छाई है

आंधियां चलती हैं वो शमा बुझाने के लिए
जल रही थीं जो हमें राह दिखाने के लिए

महवे-पर्वाज़ हैं सब चांद-सितारों की तरफ़
कोई तकता नहीं हम दर्द के मारों की तरफ़

जुस्तजू चांद-सितारों की तो जारी है मगर
आज इन्साँ को नहीं है दिले-इन्साँ की ख़बर

एटमी दौर है हर सू है भड़कते शो'ले
कैसे इंसान मुहब्बत के चमन तक पहुँचे

आज संसार में हर चीज़ गिराँ है यारो
और मुहब्बत को न पूछो, वो कहाँ है यारो?

ये हवा गर्म ज़मीं की, ये लड़ाई ठंडी
ख़ाक उड़ाते हुए बाज़ार, ये सूनी मंडी

ज़िन्दगी है कि कोई वादिए पुरख़ार है आज
दिल ही रंजूर नहीं ज़ेहन भी बीमार हैं आज

दोस्तो! रूह की आवाज़ सुनो
रूह ने दर्द के आलम में पुकारा है तुम्हें

एक ही फ़र्श पे बैठे हैं सितारों के तले
चाहते हैं कि कोई दौर अख़ुव्वत का चले

आओ मिल-जुल के मुहब्बत की वो मंज़िल ढूँढें
जिस पे तूफ़ां से मिले अम्न वो साहिल ढूँढ़ें

ग़म ने इंसान को घेरा है जलाओ शम्अें
गोशे-गोशे में अन्धेरा है जलाओ शम्अें

दिल में फिर ताज़ा तमन्ना का कंवल खिल जाए
फिर ये रूठा हुआ इंसान गले मिल जाए

जज़्बए-इश्क़ जो सीनों में रवां हो जाए
ज़िन्दगी फिर से हसीं फिर से जवां हो जाए

है इलाज एक कि सब एक जगह पर बैठें
और हम वाहमी अन्दाज़े-नज़र को समझें

अपने ऋषियों ने जलाए हैं जो पाकीज़ा चराग़
उनके अनवार में हम देख लें चेहरों के दाग़

दोस्तो! रूह की आवाज़ सुनो
रूह ने दर्द के आलम में पुकारा है तुम्हें

आज इस बज़्म में बैठे हैं जो अपने रहबर
अम्न की राह को ढूंढेंगे यहीं मिलजुल कर

प्यार का रास्ता ढूंढेगी ये पाकीज़ा सभा
आज बरसेगी इसी ख़ाक पे सावन की घटा

हर नज़र उनकी मुहब्बत का हवाला देगी
रौशनी उनकी ज़माने को उजाला देगी

जल्वा तो एक है गो नाम हैं दो, राम-ओ-रहीम
दौड़ती फिरती है हर बाग़ में इक रूहे-नसीम

सारी अक़्वामे-जहाँ अपने ही हम-पाया है
एक ही ज़ात का बिखरा हुआ ये साया है

वो बुज़र्गाने-सलफ़ थे जो मुहब्बत के अमीं
जिन के इर्फ़ां ने जलाई है ये क़न्दीले-यक़ीं

कि किसी मुल्क, किसी क़ौम का हो राहनुमा
वो दिखाता है हमें जल्वए-तौहीदे-ख़ुदा

दोस्तो! रूह की आवाज़ सुनो
रूह ने दर्द के आलम में पुकारा है तुम्हें

एक ही पीरे-मुग़ां हम को पिलाता है शराब
एक ही नूर से होती हैं निगाहें सैराब

हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज : (1858-1948)

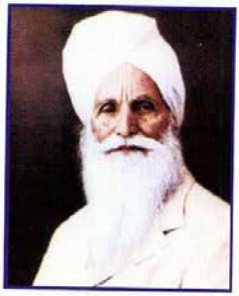

आप संत-मत परम्परा के पहले महापुरुष थे, जिन्होंने आत्म-ज्ञान की दौलत को दोनों हाथों से लुटाया। आपसे पहले 'सुरत-शब्द योग' या 'आत्म-ज्ञान' सिर्फ़ चंद लोगों तक सीमित था। आपने सवा लाख से अधिक जिज्ञासुओं को सुरत-शब्द योग की विधिवत् दीक्षा दी, जिसमें कई विदेशी भाई-बहन भी शामिल थे।

परम संत कृपाल सिंह जी महाराज : (1894-1974)

आपने सब धर्मों का एक सांझा मंच (Common Platform) बनाकर समस्त धर्माधिकारियों और अनुयाइयों को एक जगह बिठाने का महान कार्य किया। इसके चार ऐतिहासिक सम्मेलनों की भी आपने अध्यक्षता की। आपने तीन विश्व-यात्राएँ करके एवं रूहानियत के हर पहलू पर पुस्तकें लिखकर, दुनिया के कोने-कोने में जागृति का संदेश फैलाया। 1974 में प्रथम मानव एकता सम्मेलन में आपने खुले आम घोषणा की- "मैं सतयुग की नवप्रभात किरणें आसमान से उतरते देख रहा हूँ।"

दयाल पुरुष संत दर्शन सिंह जी महाराज : (1921-1989)

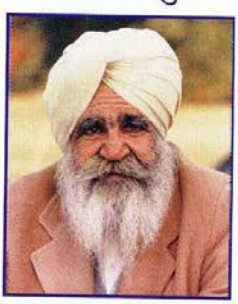

आपने अपने पंद्रह वर्ष के कार्यकाल में 'सावन कृपाल रूहानी मिशन' और 'Science of Spirituality' के 40 देशों में 550 केन्द्र स्थापित किए और 50 भाषाओं में आध्यात्मिक साहित्य का अनुवाद कराया। आप एक जाने-माने सूफ़ी कवि थे और अपने संग्रहों पर उर्दू अकादमी की ओर से आपको कई पुरस्कार मिले। आपने संत-मत को सकारात्मक अध्यात्म (Positive Mysticism) कहा। इसका अर्थ यह है कि इंसान अपने ज़िम्मेदारियों को भली-भाँति निभाते हुए, अपने कुटुम्ब, समाज, देश और विश्व की सेवा में अपना योगदान देते हुए, आत्मिक बुलन्दी को पा सकता है।

संत राजिन्दर सिंह जी महाराज : (जन्म 1946)

'सावन कृपाल रूहानी मिशन' के वर्तमान सत्गुरु, आप एक जाने-माने वैज्ञानिक और दूर-संचार प्रणाली के विशेषज्ञ हैं और विश्व भर में संत-मत की सरल तथा आधुनिक रूप में प्रस्तुति कर रहे हैं। संत कृपाल सिंह जी महाराज ने अध्यात्म और विज्ञान के बीच संवाद का जो सिलसिला शुरू किया था और जिसे संत दर्शन सिंह जी महाराज ने आगे बढ़ाया था, उसी कार्य को आप द्रुत गति से आगे बढ़ा रहे हैं।

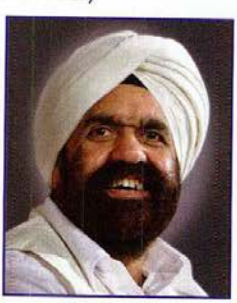

सावन कृपाल रूहानी मिशन

यह मिशन रूहानियत, शांति एवं मानव सेवा के प्रति समर्पित है। यह संस्था, जिसकी स्थापना सन् 1976 में दयाल पुरुष संत दर्शन सिंह जी महाराज (1921-1989) ने की थी, अब संत राजिन्दर सिंह जी महाराज के निरीक्षण में कार्य कर रही है। जो कार्य हुज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज (1858-1948) तथा संत कृपाल सिंह जी महाराज (1894-1974) ने प्रारम्भ किया था, उसको इन्होंने निरन्तर जारी रखा है।

इस संस्था का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, कृपाल आश्रम, विजय नगर, दिल्ली में स्थित है। संसार के पश्चिमी देशों का मुख्यालय, 'साइंस ऑफ स्पिरिचुएलिटी सेंटर', नेपरविले, इलिनोए, उत्तरी अमरीका में है। इस समय मिशन के 1700 केन्द्र हैं, जो संसार के 51 देशों में फैले हैं। मिशन का साहित्य विश्व की 53 भाषाओं में उपलब्ध है, और अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद हो रहा है।

रूहानी विज्ञान के पूर्ण गुरु ध्यान टिकाने का ऐसा सहज-सुलभ तरीका सिखाते हैं, जिसे किसी भी उम्र, देश या जाति का इंसान अपना सकता है। इस अभ्यास को 'सुरत-शब्द योग', 'संत-मत', या 'सहज योग' कहा जाता है। ध्यान-अभ्यास की कला सीखने के साथ-साथ, यहाँ जिज्ञासु यह भी सीखते हैं कि जीवन को कैसे सदाचारी बनाया जाए, ताकि वे बेहतर नागरिक बन सकें और संसार की मदद कर सकें।

SAWAN KIRPAL RUHANI MISSION

सावन कृपाल पब्लिकेशन्स रिपरिचुअल सोसायटी
'कृपाल-आश्रम', संत कृपाल सिंह मार्ग, विजय नगर, दिल्ली-110 009
दूरभाष : 011-27117100
website : www.sos.org